अनुक्रमणिका

संजय उवाच (संपादकीय)		४
संस्था का परिचय		७
२०१२ की गोष्ठियाँ		११
आलेख		
बिन चिड़िया का जंगल	विश्वनाथ सचदेव	१२
गार्गी मैत्रेयी के बहाने	डॉ. रति सक्सेना	१४
वीसा, बीमा और दिल	डॉ. दामोदर खड़से	१८
अद्‌भुत विश्व तथा विज्ञान	संजय भारद्वाज	२१
दिनचर्या के हर कर्म में विज्ञान	पं.जयनारायण पुरोहित	२४
आनंद के द्वारा दमन	प्रभु जोशी	२६
युनिकोड की भूमिका	विजय कुमार मल्होत्रा	३०
शीतला माता	लीना मेहेंदळे	३७
स्वराज्य निर्माण	कैलाशचंद्र पंत	४३
पर्यटन विकास	डॉ. सुनील केशव देवधर	४६
हिंदी लेखक का बँटवारा	दिविक रमेश	४७
ज्ञानदेवभगिनी मुक्ताबाई	डॉ. अशोक कामत	४९
क्यों पढ़ें महापुरुषों की गाथाएं	डॉ. केशव प्रथमवीर	५१
बचपन बचाओ	डॉ. अजीज अंबेकर	५७
हम और हमारी हिंदी	डॉ. श्रीमती तारा सिंह	५८
डिप्रेशन भगाएँ	डॉ. मंजुला शर्मा	५९
ऐसे सक्रिय करें यूनीकोड को	डॉ. राजेंद्र वर्मा	६१
भूमंडलीकरण	डॉ. ओमप्रकाश शर्मा	६३
शब्द सरल-कठिन नहीं	लोचन मखीजा	६५
हिंदी का वैश्विक संदर्भ	डॉ. चंद्रकात मिसाळ	६७
पहले राष्ट्र फिर भाषा	अनिलकुमार जोशी	६९
ॐ साधना	विजया टेकसिंघानी	७०
धर्म बनाम कर्म	डॉ. तरन्नुम बानो	७१
व्यंग्य		
जनता की सेवा	अक्षय जैन	७२
पधारो युवराज	कैलाश सेंगर	७४
चाय और चाय-पानी	सुधीर कोठारी	७५
संस्मरण		
डायरी के पन्ने	पुष्पा भंटार	७६
नमक	गीतिका द्विवेदी	७८
सावन	प्रा. ऋजुता चतुर	७९
मंत्र	डॉ. कांतिदेवी लोधी	८०
कहानियाँ		
माइग्रेन्ट	रजनी पाथरे 'राजदान'	८२
क्लीन बोल्ड	घनश्याम अग्रवाल	८६
कलेजा	डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव	८८
ऑनर किलिंग	डॉ. स्मिता दात्ये	९१
नाटक ऐसा ही होता है	दीपक चैतन्य	९३
नैहर	रिज़वाना कश्यप	९५
लड़की थी वह	सुधा ओम ढींगरा	९८
कहानी दुष्ट कौए की	डॉ. कौशल पांडेय	१००
वह गोष्ठी		१०२-१०८
(स्वरांगी साने, सुधीर कोठारी, आशु गुप्ता, रेखा सिंह, डॉ. कांतिदेवी लोधी, गीतिका द्विवेदी, मेजर सरजूप्रसाद,गोवर्धन शर्मा, रीटा शहाणी, मीनाक्षी भालेराव, डॉ. ममता जैन, श्यामलाल सिंहल, खलीकुर्रहमान जिया बागपती, डॉ.नंदिनी नारायण एवं पुष्पा भंटार के अनुभव समाविष्ट)		
कविताएं		
वापसी	हरिनारायण व्यास	१०९
एक बेतरतीब भागमभाग	बालकवि बैरागी	११०
गाँव का खत शहर के नाम	डॉ. लालित्य ललित	११०
अकड़	अश्वनी शर्मा	१११
एक देश और मरे हुए लोग	विमलेश त्रिपाठी	१११
सत्य	डॉ. मालती शर्मा	११२
एक कहानी	आसावरी काकडे	११२

अरसा पहले	अमित आनंद पांडेय	११२
हास्य कवि	शैलजा पाठक	११३
मेरा घर और तकनीकी क्रांति	तेजेन्द्र शर्मा	११३
अंधा विकास	अनिल अब्रोल	११४
पटरियाँ	हूबनाथ	११४
भूख	किशोर निगम	११४
क्रांति	पीतांबरदास सराफ़	११५
एक और दृष्टिकोण	डॉ. हर्षकांत शर्मा	११५
मर गई बंतो बुआ	अतुल कनक	११५
स्त्री सुलभ	सुधा भारद्वाज	११६
आओ कविता करें	तरुण शर्मा	११६
समझदार लड़कियाँ	स्वरांगी साने	११६
रिक्शावाला जाएगा	कुंवर प्रीतम	११७
पीर जगा देती महंगाई	डॉ. प्रकाश दीक्षित	११७
शूल	डॉ. ममता जैन	११८
कोई फर्क नहीं पड़ता	अलकनंदा साने	११८
हिसाब	डॉ. मुकेश गौतम	११९
उद्घोष	मेजर सरजूप्रसाद'गयावाला'	११९
कौए उड़ा रही है माँ	मीठेश निर्मोही	११९
लोरी	मुमताज़ मुनव्वर	११९
शून्य	मीनाक्षी भालेराव	१२०
कविता और भूख	कुमार शर्मा 'अनिल'	१२०
मैं गांधारी नहीं	रेखा सिंह	१२०
ग़ज़ल	ज़िया बागपती	१२०
ग़ज़ल	लतीफ जौहर	१२०
ग़ज़ल	इकबाल हमीद	१२१
सपना	अपर्णा कडसकर	१२१
शख्स	निर्मला राजपूत	१२१
लोहा लो	डॉ. अनिल कुडिया	१२१
याद	रईसा खुमार	१२२
कुछ बच्चे देख रहे हैं	शिव डोयले	१२२
वाह	हितेश व्यास	१२२
मासूम या समझदार	डॉ. अनिता ठक्कर	१२३
अपलक	स्वाति ठकार	१२३
महक	डॉ. नंदिनी नारायण	१२३
ग़ज़ल	रफीक काज़ी	१२३
चुपचाप	पुष्पा गुजराथी	१२४
उम्मीद	राकेश श्रीवास्तव	१२४
जय भारत,जय हिंदी भाषा	डॉ. रमेश गुप्त 'मिलन'	१२४
ग़ज़ल	गोवर्धन शर्मा 'घायल'	१२४
ग़ज़ल	बलदेव 'निर्मोही'	१२५
ग़ज़ल	शमशाद जलील 'शाद'	१२५
आस	अलका अग्रवाल	१२५
सायों की गठरी	डॉ. अनिता सत्संगी	१२५
दीमक क्यों	भोलादत्त जोशी	१२६
गणेश वंदना	अरुणा शुक्ला	१२६
दिया जले डगर-डगर	अमर त्रिपाठी	१२६
दुनिया के रंग हजार	श्यामलाल सिंहल	१२६
कभी छोड़कर जाना नहीं माँ	अपूर्व शर्मा	१२७
अंतर	निर्मला मित्तल	१२७
सरकार	मधु सालुंके	१२७
मुश्किल है	कनुभाई त्रिवेदी	१२८
बहुमत	मधु हातेकर	१२८
वंदनीय नारी	गजेंद्र 'देव'उपाध्याय	१२८
तुझे जीना है	सिद्धार्थ पुरोहित	१२८
अलविदा	माधुरी नगरकर	१२९
किसान	विजय कोटस्थाने	१२९
चुनौती	भगवान हराणी	१२९
माटी का अपमान	सरदार परमजीत सिंह	१२९
सिंहाची गर्जना	अण्णा धगाटे	१२९
एकात्मता गीत	अमला घाटपांडे	१३०
जगरहाटी	जयसिंह हिरे	१३०
अंक	त्रिशिलावती कांबळे	१३०
चारोळी	गौतम बामणे	१३०

संजय उवाच

अरण्यरुदन से आगे

(संपादकीय)

प्रायः हम सब भाषा को नई तकनीक, विज्ञान, आधुनिक संसाधनों से जोड़ने की बातें तो करते हैं पर ज्योंहि मसला खुद से आरंभ करने पर आता है तो कतार में पीछे जगह तलाशने लगते हैं। अलबत्ता मामला यदि बिना किसी कठिनाई के कुछ पाने का हो तो अपनी सुविधा के अनुसार,'हम जहाँ खड़े होते हैं, कतार वहीं से शुरु होती है' जैसे जुमलों का प्रयोग कर लेते हैं।

उपरोक्त संदर्भ में 'हम लोग' का वर्ष २०१२ का यह वार्षिकांक कुछ अर्थों में पिछले अंक से भिन्न है। भिन्न इस रूप में कि इस अंक के लिए हमने रचनाओं की केवल सॉफ्ट कॉपी लेने का निर्णय किया। हमारी नीति स्पष्ट है। भारतीय भाषाओं में लिखने-पढ़नेवालों को तकनीकी रूप से भी युगानुकूल होने का प्रयास करना चाहिए और संगणक पर देवनागरी के प्रयोग से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए। यों भी समकालीनता के स्वर को अनसुना करना प्रकृति की मूलभावना के विरुद्ध है।

हमें ३० से ३५ प्रतिशत रचनाएं सॉफ्ट रूप में मिलने की संभावना थी। पर मित्रों का सहयोग ऐसा मिला कि लगभग ६० प्रतिशत रचनाएं सॉफ्ट रूप में आईं। अगले अंक में हम इस प्रतिशत को और आगे ले जाने का मानस रखते हैं। नया हासिल करने के लिए उसे जानने की जिज्ञासा, समर्पण और संकल्प होना अनिवार्य है। इस जिज्ञासा के चलते अनेक मित्रों ने संगणक पर हिंदी में काम करने की जानकारी चाही।फोन पर और फोनेटिक्स में ही सही, मित्रों को हिंदी में कम्प्युटर साक्षर करने का विशेष आनंद मिला। कइयों ने तो हिंदी में जीवन का पहला ई-मेल, आंदोलन को किया।

अलबत्ता सॉफ्ट कॉपी की अपनी दिक्कतें भी रहीं। कुछ मित्रों ने सॉफ्ट कॉपी के स्थान पर स्कैन इमेज भेज दी। यूनिकोड में सारी रचनाएँ नहीं आईं। इसके चलते लिप्यंतरण (कन्वरजन) की समस्याएँ आईं। परिणामस्वरूप अनुस्वार,चँद्रमात्रा,कतिपय अक्षरों में एकसूत्रता रखने में कठिनाई हुई। पर आदर्श स्थितियाँ एक बार में ही हासिल हो जायेंगी, ये मानना ज्यादती होता। हमारे लिए समयानुकूल आचरण आरंभ करना अधिक आवश्यक था। यों भी 'परास्त वही हुआ, जो अपने समय को सहेज न सका।'

अपने समय को सहेजकर तेजी से अपना प्रभामंडल बढ़ाती भारतीय भाषाओं विशेषकर हिंदी के विरुद्ध 'फूट डालो और राज करो' की कूटनीति निरंतर प्रयोग में लाई जा रही है। इन दिनों हिंदी की बोलियों को स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता दिलाने की गलाकाट प्रतियोगिता शुरु हो चुकी है। खास तौर पर जनगणना के समय इंटरनेट के जरिये इस बात का जोरदार प्रचार किया गया कि हम हिंदी की बजाय उसकी बोलियों को अपनी मातृभाषा के रूप में पंजीकृत करायें। संबंधित बोली को आठवीं अनुसूची में दर्ज कराने के सब्जबाग दिखाकर, हिंदी की व्यापकता को कागज़ों पर कम दिखाकर आंकड़ो के युद्ध में उसे परास्त करने के वीभत्स षड्यंत्र से क्या हम लोग अनजान हैं? राजनीतिक इच्छाओं की नाव पर सवार बोलियों को भाषा में बदलने के आंदोलनों के प्रणेताओं (!) को समझना होगा कि यह नाव उन्हें घातक भाषायी षड्यंत्र की सुनामी के केंद्र की ओर ले जा रही है। अपनी राजनीति चमकाने और अपनी रोटी सेंकनेवालों के हाथ फंसा नागरिक संभवतः समझ नहीं पा रहा है कि यह भाषायी बंदरबाँट है। रोटी किसीके हिस्से आने की बजाय बंदर के पेट में जायेगी। बेहतर होता कि मूलभाषा-हिंदी और उपभाषा के रूप में बोली की बात की जाती।

हिंदी और हिंदीतर लेखक, निवासी और प्रवासी लेखक जैसी संज्ञाएं भी इसी श्रृंखला की अगली कड़ी हैं। इस तर्ज़ पर तो भारत के सभी अंग्रेजी लेखकों को अब तक 'अंग्रेजीतर अंग्रेजी लेखक' के सैकड़ों अंतरराष्ट्रीय सम्मान कूट लेने चाहिए थे। आशा है कि इन अवरोधों को समाप्त कर हम आगे आ पाएंगे और विश्वभर के हिंदी लेखकों का एक ही समुदाय होगा।

भारतीय भाषाओं के आंदोलन को आगे ले जाने के लिए छात्रों से अपेक्षित है कि वे अपनी भाषा में उच्च शिक्षा पाने के अधिकार को यथार्थ में बदलने के लिए पहल करें। स्वाधीनता के ६५ वर्ष बाद भी न्यायव्यवस्था के निर्णय विदेशी भाषा में आते हों तो संविधान की पंक्ति-'भारत एक सार्वभौम गणतंत्र है' अपना अर्थ खोने लगती है।

देखने में आया है कि चीन का युवा अंग्रेजी में कोई बात सीखता है तो सबसे पहले उसे मंदारिन में अनूदित कर इंटरनेट पर अपलोड कर देता है। भारतीय युवाओं से भी अपेक्षित है कि दुनिया की हर तकनीक को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करा दें।

आधुनिक तकनीक और संचार के अधुनातन साधनों से अपनी बात दुनिया तक पहुँचाना तुलनात्मक रूप से बेहद आसान हो गया है। भारतीय भाषाओं में अंतरजाल पर इतनी सामग्री अपलोड कर दें कि ज्ञान के इस महासागर में डुबकी लगाने के लिए अन्य भाषा भाषी भी हमारी भाषाएं सीखने को विवश हो जाएं।

सरकार से अपेक्षित है कि हिंदी प्रचार संस्थाओं के सहयोग से विदेशियों को हिंदी सीखाने के लिए क्रैश कोर्सेस शुरु करे। भारत आनेवाले सैलानियों के लिए ये कोर्सेस अनिवार्य हों। वीसा के लिए आवश्यक नियमावली में इसे समाविष्ट किया जा सकता है।

बढ़ते विदेशी पूँजीनिवेश के साथ भारतीय भाषाओं और भारतीयता का संघर्ष 'अभी नहीं तो कभी नहीं'की स्थिति में आ खड़ा हुआ है। समय की मांग है कि 'उसकी कमीज़ मेरी कमीज़ से सफेद कैसे' जैसी तुलना या मैग्निफाइंग ग्लास लेकर पत्र-पत्रिकाओं में व्याकरण और वर्तनी की गलतियाँ तलाशने की वृत्ति छोड़कर, बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी साहित्यकार साथ आएं। केवल हिंदी नहीं अपितु भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों के एकसाथ आने की आवश्यकता है। प्रादेशिक स्तर पर प्रादेशिक भाषा और राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के नारे को बुलंद करना होगा। 'अंधाधुंध अंग्रेजी'के विरुद्ध ये एकता अनिवार्य है। वस्तुतः यह अरण्यरुदन का नहीं अपितु उससे आगे देखने का समय है।

इस वार्षिकांक के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बिंदु पर चर्चा करनी होगी। भारतीय भाषाओं और भारतीयता के लिए समर्पित हिंदी आंदोलन का केंद्र भले ही पुणे हो, इसका स्पंदन कई शहरों तक पहुँचने लगा है। यही कारण है कि देश के विभिन्न नगरों के अनेक रचनाकार इस अंक में अपनी छटा बिखेरते हुए दृष्टिगोचर हैं। विदेशों में बसे हिंदी साहित्यकारों की उपस्थिति इस अंक को विशेष आभा प्रदान करती है। १११ रचनाकारों का 'हम लोग' के इस अंक में सम्मिलित होना संस्था की उपलब्धि है।

अंक पर काम करते समय प्रयास रहा कि पाठक को जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी भाषा में पढ़ने को मिल सके। यही कारण है कि भाषा के साहित्यिक-सांस्कृतिक-सामाजिक पक्ष से लेकर वैज्ञानिक विषयों, कंप्युटर पर देवनागरी के प्रयोग, यूनिकोड,पर्यावरण, यात्रा वृत्तांत,अध्यात्म, पर्यटन, व्यंग्य, कहानियाँ, संस्मरण, कविताएं, आंदोलन की गोष्ठियों पर सहभागियों के अनुभव जैसे अनेक पक्ष इसमें शामिल किये गये हैं।

'हम लोग' के इस अंक को निखारने में जिन कलमकारों ने अपनी रचना के माध्यम से अमूल्य योगदान किया, उनके प्रति हम कृतज्ञ हैं। इन सर्जकों के शब्द ही अंक की आत्मा है। सनातन सत्य है कि आत्मा को कृति के लिए देह धारण करनी पड़ती है, विज्ञापनदाताओं के बिना पत्रिका को कागज़ पर उतारना संभव ही नहीं था। हम उनके हार्दिक ऋणी हैं। विज्ञापन एकत्रित करने के लिए हमारी कार्यकारिणी विशेषकर अनिल अब्रोल, अपर्णा कडसकर और मेजर सरजूप्रसाद ने प्रशंसनीय कार्य किया। अंक के ले-आउट, ग्राफिक्स और डिज़ाइन का सारा भार सदा की तरह सुधाजी ने समर्थ रूप से वहन किया।

कई सुप्रसिद्ध हस्ताक्षरों से संपन्न ये अंक आपकी आशाओं पर खरा उतरेगा, इसका विश्वास है। पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

संजय भारद्वाज

भारतीय संविधान में हिंदी

अनुच्छेद ३४३- संघ की राजभाषा

(१) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

अनुच्छेद ३४४- राजभाषा के संबंध में आयोग

(१) राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

(२) आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को-

(क) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग,

(ख) संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों,

(ग) अनुच्छेद ३४८ में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,

(घ) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,

(ड़) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करें।

पुणे का सक्रिय सांस्कृतिक–सामाजिक संगठन

हिंदी आंदोलन

प्रस्तावना–

हिंदी आंदोलन पुणे के सामाजिक–साहित्यिक–सांस्कृतिक क्षेत्र में हिंदी माध्यम से कार्यरत सक्रिय संगठन है। साहित्य याने 'स–हित'। समाज के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के साहित्य के सच्चे मर्म को संस्था ने समझा और व्यवहार में उतारा। यही कारण है कि हिंदी आंदोलन देश का संभवतः एकमात्र ऐसा संगठन है जिसने साहित्य को न केवल आम आदमी से जोड़ा बल्कि समाजसेवा का साधन भी बनाया। लगभग डेढ़ दशक से हिंदी, मराठी, उर्दू एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों को साथ लेकर काम करनेवाले हिंदी आंदोलन ने अदम्य इच्छाशक्ति तथा निरंतर क्रियाशीलता से साहित्यिक–सामाजिक–सांस्कृतिक जगत में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

स्थापना–

हिंदी आंदोलन की स्थापना १९९५ में श्री संजय भारद्वाज ने की। साहित्यकारों और सजग नागरिकों को जोड़ने के लिए मासिक साहित्यिक गोष्ठियों का सहारा लिया गया। ३० सितम्बर १९९५ को संस्था की पहली गोष्ठी हुई।

नामकरण की पृष्ठभूमि–

लोकभाषा में हिंद महासागर को 'हिंदी सागर' कहा जाता है। इससे प्रेरित होकर व्यापक अर्थ में भारतीयों को हिंदी मानकर संस्था का नामकरण हिंदी आंदोलन किया गया। इकबाल के 'हिंदी हैं हम' को संस्था का बोधवाक्य बनाया गया।

उद्देश्य–

भाषा संवाद का सशक्त माध्यम है। किसी भी समुदाय में संवाद स्वभाषा में हो तो अपनत्व का भाव जगता है, एकता का संचार होता है। विदेशी भाषा का उपयोग संवादहीनता को जन्म देता है। जनता और तंत्र के बीच अकारण एक दूरी भी उत्पन्न करता है। यह दूरी जनतंत्र की मूलभावना पर कुठाराघात है। अतःआंदोलन ने भारतीय भाषाओं के समर्थन के लिए काम करने का निर्णय किया।

आंदोलन का प्रयास है कि राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी और राज्य स्तर पर प्रादेशिक भाषा को रोजी–रोटी का साधन बनाया जाये। विदेशी भाषा के आजीविका का साधन बन जाने से असंख्य प्रतिभाएं कुंठित हो रही हैं। अपनी भाषा में होने वाला मौलिक चिंतन ही किसी राष्ट्र के विकास की यात्रा को गति प्रदान करता है।

हम चाहते हैं कि देश भर में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम एक ही हो, केवल इतिहास और भूगोल के कुछ पाठ प्रदेश की आवश्यकतानुसार अलग हों ताकि छात्र अपने प्रदेश से भलीभांति परिचित रहें। त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत उत्तर भारत के छात्रों को विदेशी भाषा की अपेक्षा दक्षिण की एक भाषा सीखने के लिए प्रेरित किया जाये।

भूमंडलीकरण के दौर में हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि १२० करोड़ का भारत अपने आप में एक भूमंडल है। यदि हम विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षमता का समुचित उपयोग कर सकें तो विश्व हमारी शर्तों पर हमारे पास आयेगा। अतः हर भारतीय को जीवन के हर क्षेत्र में भारतीय भाषाओं और भारतीयता का समर्थन करना चाहिए। आंदोलन के उद्देश्य निम्नवत हैं–

१) भारतीय भाषाओं को रोटी से जोड़ने के लिए प्रयत्न करना।
२) भारतीय साहित्य, लोकसंस्कृति एवं लोक–कलाओं का प्रचार करना।
३) भारत के सामाजिक–साहित्यिक–शैक्षिक–ढांचागत विकास में सक्रिय योगदान करना।
४) भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और तार्किक परंपराओं का प्रचार–प्रसार करना।
५) राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सौहार्द और विश्व बंधुत्व के लिए कार्य करना।
६) विकास से वंचित सामजिक घटकों विशेषकर बच्चों,असहाय महिलाओं और वृद्धों के लिए काम करना।
७) पर्यावरण की रक्षा और संवर्धन के लिए काम करना।
८) काल–पात्र–परिस्थिति अनुरूप राष्ट्र और समाज के हित के प्रकल्प कार्यन्वित करना।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ–

रचना गोष्ठियाँ–

पिछले १७ वर्ष से हिंदी आंदोलन निरंतर अबाधित रूप से बहुभाषी रचना गोष्ठियाँ आयोजित करता आ रहा है। दिसम्बर २०१२ तक ऐसी १६८ गोष्ठियों का आयोजन हो चुका है। इन गोष्ठियों में अनेक राष्ट्रीय रचनाकारों ने भाग लिया तो इन्हीं गोष्ठियों ने अनेक राष्ट्रीय रचनाकार साहित्य को दिये भी। इन गोष्ठियों में हिंदी, मराठी, उर्दू की रचनाओं के साथ-साथ सिंधी, कोंकणी, काश्मीरी, राजस्थानी, गुजराती आदि में भी प्रस्तुति हुई। इन गोष्ठियों ने लब्ध-प्रतिष्ठितों के साथ नवोदितों को भी मंच दिया। सुखद अनुभव है कि आंदोलन की प्रायः हर गोष्ठी में एक नया रचनाकर संस्था से जुड़ता है। अब तक लगभग ५०० रचनाकारों को हिंदी आंदोलन मंच उपलब्ध करा चुका। संचालन के क्षेत्र में नई प्रतिभाएं भी इन गोष्ठियों ने दीं।

रचना गोष्ठियों में नए प्रयोग–

१) काव्यभोर–

भारतीय दर्शन में भोर को ब्रह्मसमय माना गया है। सांस्कृतिक आयोजन मंदिरों में संपन्न होने की परंपरा भी रही। आंदोलन देश की संभवतः एकमात्र ऐसी संस्था है जो परंपरा और दर्शन के अनुरूप वर्ष में एक गोष्ठी 'काव्यभोर' के रूप में प्रातःकाल किसी मंदिर में आयोजित करती है।

२) नया क्या पढ़ा–

आंदोलन में हम मानते हैं कि जो बाँचेगा, वही रचेगा और जो रचेगा, वही बचेगा। इस सिद्धांत को क्रियान्वित करते हुए हर गोष्ठी में किसी एक रचनाकार से जाना जाता है कि इस बीच उसने नया क्या पढ़ा? वाचन संस्कृति को जीवित रखने में लिखनेवालों की ये अनिवार्य सहभागिता संस्था की सैद्धांतिक प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

३)गोष्ठियों में विविधता–

निरंतर प्रयोगशीलता आंदोलन की गोष्ठियों को विविधतापूर्ण बनाती है। रचनाकार विशेष पर आधारित 'फोकस' हो, गीत, नृत्य, संगीत जैसी ललितकलाओं का समावेश, विभिन्न शीर्षक यथा-माँ, पिता, चिट्ठी जैसे विषयों पर केंद्रित आयोजन, कविताओं के साथ लघुकथा, लेख, व्यंग्य, कहानियों का वाचन, सब गोष्ठियों को आनंददायी अनुभव में बदल देते हैं। एक विषय पर एक ही रचनाकार की विपरीत पृष्ठभूमि की दो कविताओं का पाठ, यथा बारिशःदो रंग-(अकाल और बाढ़) जैसे आयोजनों ने इन गोष्ठियों को अनन्य बना दिया है।

लोकनृत्य महोत्सव–

आंदोलन १२ वर्ष से 'ढोल बाजे ढोल' नामक अंतरमहाविद्यालयीन लोकनृत्य महोत्सव का आयोजन कर रहा है। इस आयोजन के माध्यम से बड़ी संख्या में युवा भारतीय नृत्यों और लोक-संस्कृति का अध्ययन करने के लिए प्रेरित होते हैं। युवाओं को बड़ी धनराशि के पुरस्कार वितरित किये जाते हैं।

परिसंवाद–

संस्था छोटे-बड़े परिसंवाद और चिंतन बैठकों का आयोजन करती रही है। २००१ में 'हिंदी-घोषित राष्ट्रभाषाः उपेक्षित राजभाषा' विषय पर आंदोलन ने बड़े पैमाने पर परिसंवाद आयोजित किया था। कला, पत्रकारिता, बैंकिंग, शिक्षा, विज्ञान, जैसे क्षेत्रों के जाने-माने चिंतकों के विचारोत्तेजक व्याख्यानों ने इस परिसंवाद को संस्मरणीय बना दिया।

नवोदित कवि सम्मेलन–

हिंदी आंदोलन प्रतिवर्ष नवोदित रचनाकारों के लिए कवि सम्मेलन आयोजित करता है। इससे नई प्रतिभा को मंच मिलता है साथ ही वरिष्ठ रचनाकारों द्वारा उसका मार्गदर्शन भी किया जाता है। लगभग २०० नवोदितों को आंदोलन अब तक अंकुरित होने का अवसर दे चुका है।

हिंदी भूषण सम्मान–

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर पर अतुलनीय योगदान देनेवालों को 'हिंदी भूषण' सम्मान प्रदान किया जाता है। इसी प्रकार उल्लेखनीय काम करनेवालों को 'हिंदीश्री' अलंकरण दिया जाता है। अनेक विभूतियों को अब तक ये सम्मान प्रदान किये जा चुके हैं।

सरस्वती पूजन–

आंदोलन पिछले १६ वर्ष से वसंत पंचमी पर ज्ञान की अधिष्ठात्री माँ सरस्वती की पूजा का आयोजन करता है। इस आयोजन के लिए वासंती परिधान अनिवार्य होता है। विभिन्न

धर्म, समुदाय के साहित्यकार एकत्रित होकर सरस्वती पूजा करते हैं। वासंती परिधान और वासंती वातावरण मिलकर इस आयोजन को विशिष्ट बना देते हैं।

सामाजिक गतिविधियाँ–

संस्था वर्ष भर में अनेक गतिविधियाँ समाज के उपेक्षित एवं जरूरतमंद वर्ग के लिए करती है। विशेषकर शरद पूर्णिमा और मकर संक्रांति के आयोजन इन वर्गों के साथ किए जाते हैं। आंदोलन द्वारा संपन्न कुछ सामाजिक आयोजन इस प्रकार हैं–

फुटपाथ पर रहनेवाले बच्चों के बीच–

संस्था ने शरद पूर्णिमा का आयोजन फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों के लिए किया। बच्चों को जलपान कराया गया और केशरयुक्त दूध वितरित किया गया।

प्लेटफॉर्म पर रहनेवाले बच्चों के बीच–

आंदोलन ने पुणे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर रहनेवाले बच्चों के बीच गणतंत्र दिवस मनाया। बच्चों को उनकी ललित कलाएं प्रस्तुत करने के के लिए कहा गया। हर बच्चे को औसत दो जोड़ी कपड़े दिये गये।

वेश्याओं के एड्सग्रस्त बच्चों के बीच–

आंदोलन वेश्याओं के खासतौर पर एड्सग्रस्त बच्चों के बीच पहुँचा। संस्था के सदस्यों ने इन बच्चों की ललित कलाओं को मंच दिया। इन बच्चों के मनोरंजन के लिए इन्हें म्युजिक सिस्टम उपहार स्वरूप दिया गया।

मूक–बधिर विद्यार्थियों के बीच–

आंदोलन अनेक बार मूक–बधिर बच्चों के विद्यालय पहुँचा। समाज की मूलधारा में सम्मिलित करने के उद्देश्य से इन छात्रों को आंदोलन के लोकनृत्य महोत्सव में प्रस्तुति के लिए मंच उपलब्ध कराया गया। संबंधित विद्यालय को सिलाई मशीन उपहार स्वरूप दी गई। छात्रों को लेखन पुस्तिकाएं भी बाँटी गईं।

नेत्रहीन विद्यार्थियों के बीच–

आंदोलन अनेक बार नेत्रहीन बच्चों के विद्यालय पहुँचा। समाज की मूलधारा में सम्मिलित करने के उद्देश्य से इन छात्रों को लोकनृत्य महोत्सव में प्रस्तुति के लिए मंच उपलब्ध कराया गया।

महिलाश्रम में–

आंदोलन ने रक्षाबंधन के कुछ आयोजन अनाथ महिलाश्रम की महिलाओं के बीच किये। आंदोलन के सदस्यों ने इन महिलाओं से राखी बंधवाई व यथाशक्ति सहायता भी की गई।

वृद्धाश्रम में–

आंदोलन ने कुछ आयोजन वृद्धाश्रम में किये। वृद्धों के साथ संवाद स्थापित कर उनकी ललित कलाओं को मंच उपलब्ध कराया गया। फल वितरित किये गये और अनाज देकर आश्रम की यथाशक्ति सहायता की गई।

निरीक्षणगृह की लड़कियों के बीच–

आंदोलन ने नववर्ष सरकारी निरीक्षणगृह की लड़कियों के साथ मनाया। बच्चियों ने विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किये। बच्चियों को लगभग १०० जोड़ी कपड़े मुहैया कराये गये। सामूहिक दीपोत्सव भी किया गया।

बाल सुधारगृह के लड़कों के बीच–

आंदोलन ने रक्षाबंधन का एक आयोजन बाल सुधारगृह के लड़कों के साथ किया। आंदोलन की महिला सदस्यों ने इन किशोरों को राखियाँ बाँधीं। विषमता और विवशतावश अपराधी बने इन किशोरों को संस्था ने एक टेलिविजन सेट भेंट किया। सुधारगृह के परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया।

कैदियों के बीच–

हिंदी आंदोलन ने येरवदा जेल के कैदियों के बीच एक विशेष कार्यक्रम किया। कैदियों के लिए विशेषकर हास्य कविताएं प्रस्तुत की गईं। इस कार्यक्रम की खासियत थी कि इसमें कैदियों ने भी कविता पाठ किया। जेल के भीतर किया गया यह आयोजन ऊपरी तौर पर कैदी का बिल्ला लगाये व्यक्ति के भीतर झाँकने का एक प्रयास था।

कविताओं द्वारा शहीदों के लिए कोष–

कारगिल युद्ध के बाद आंदोलन ने स्वाधीनता दिवस पर 'माँ तुझे सलाम' नामक देशभक्तिपरक कविताओं का कार्यक्रम आयोजित किया। इस आयोजन से मिली राशि कारगिल राहत कोष में दी गई।

कविताओं द्वारा भूकंप पीड़ितों के लिए कोष–

गुजरात के भूकंप के बाद आंदोलन ने कविताओं का कार्यक्रम आयोजित किया। इस आयोजन से मिली राशि से कंबल

खरीदकर रेडक्रॉस के माध्यम से पीड़ितों तक पहुँचाये गये।

तीर्थयात्रियों की सेवा–

अध्यात्म सांस्कृतिक जड़ों तक पहुँचनेवाला साहित्य का सार्थक प्रकार है। अद्वैत भाव के बिना हृदयस्पर्शी साहित्य रचा भी नहीं जा सकता। इसी भाव की खोज में संस्था पिछले अनेक वर्ष से आलंदी से पंढरपुर तक २६५ किमी की पैदल तीर्थयात्रा करनेवाले 'वारकरियों' को अपनी शक्तिनुसार जलपान कराती है।

पर्यावरण के प्रति सजगता–

आंदोलन ने अपने आयोजनों में पुष्पगुच्छ के स्थान पर पौधे देने की परंपरा बनाई है। संस्था छोटे–बड़े सब मिलाकर अब तक लगभग एक हजार पौधे वितरित कर चुकी है। इनमें से केवल पाँच प्रतिशत भी विकसित हो पाये हों तो आंदोलन को गर्व है कि शहर को पचास पेड़ उसने दिये हैं।

विनम्र उपलब्धियाँ –

भारतीय भाषाओं के प्रचार–प्रसार के लिए हिंदी आंदोलन ने विशेष प्रयास किए। आंदोलन को ऐसी पहली संस्था होने का गौरव प्राप्त है जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखनेवालों को सक्रिय रूप से साथ लाई। इससे अलग–अलग भाषा–भाषी समाज की समस्याएं, उनकी प्राथमिकताएं , उनके अंतर्द्वंद्व वृहत्तर समुदाय समझ सका। फलस्वरूप परस्पर सौहार्द और विश्वास का वातावरण और सह–अस्तित्व का सेतु बना। समूह के सदस्यों के पारिवारिक संबंध भी प्रगाढ़ हुए।

संस्था के उदय के पूर्व अनेक स्थापित और नवागत प्रतिभाएं कुंठित हो रही थीं अथवा शहर के बाहर प्रयास कर रहीं थीं। आंदोलन की 'एक्सप्रेशन थेरेपी' ने इन सारी अनुभूतियों को अभिव्यक्ति का मंच दिया। शनैः–शनैः पुणे में भारतीय भाषाओं विशेषकर हिंदी के लिए चेतन वातावरण बना। कभी–कभार सुनाई पड़नेवाले हिंदी पुस्तकों के लोकार्पण और अनेक अन्य आयोजन अब शहर में नियमित गतिविधि बन चुके हैं।

भविष्य की साहित्यिक योजनाएं–

१) संस्था के विभिन्न प्रकल्पों के लिए सभागृह किराये से लेने पड़ते हैं। कामों के विस्तार के साथ संस्था बड़े स्थान की आवश्यकता अनुभव करने लगी है। भविष्य में संस्था पुणे में अपना भवन बनाना चाहती है।

२) संस्था पुस्तकालय और पुस्तक भंडार आरम्भ करने की इच्छा रखती है।

३) आंदोलन भारतीय भाषाएं सीखने–सीखाने के लिए एक केंद्र आरंभ करना चाहता है । केंद्र में विभिन्न भाषाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रस्ताव है।

४) संस्था अपनी पत्रिका आरंभ करना चाहती है।

भविष्य की सामाजिक योजनाएं–

१) हिंदी आंदोलन एक ही इमारत में मिला–जुला वृद्धाश्रम और बाल अनाथाश्रम आरंभ करना चाहता है ताकि बच्चे और बुजुर्ग दोनों स्नेह से वंचित ना रहें।

२) फुटपाथ के बच्चों का शोषण रोकने के लिए रात्रि आवास का विचार है।

३) गरीबी की रेखा के नीचे जीवन बसर करनेवालों के लिए नाममात्र शुल्क वाला भोजनालय प्रस्तावित है।

जुड़ें हिंदी आंदोलन से–

हम जानते हैं कि वर्तमान में ये योजनाएं स्वप्नवत हैं। पर ये नींद में देखे जानेवाले नहीं अपितु नींद उड़ा देनेवाले स्वप्न हैं। आंदोलन की आँखों को सपने देखने की ये शक्ति अपने सदस्यों, मित्रों और हितैषियों से मिली है।

हमें तन–मन–धन से साथ दे सकनेवाले स्नेहीजनों की प्रतीक्षा है। संस्था के स्वप्नों की पूर्ति में आप सहयोग कर सकते हैं। आप संस्था के परम विशिष्ट/अति विशिष्ट/विशिष्ट/संरक्षक/ आजीवन/ साधारण सदस्य बनकर अपना योगदान दे सकते हैं। आप संस्था को सीधे आर्थिक सहायता भी प्रदान कर सकते हैं।

संपर्क–

16, कोहिनूर प्लाज़ा, पेट्रोल पम्प के पास, एलफिंस्टन रोड, खडकी, पुणे–411003, दूरध्वनि– 9890122603, 9822292612, ई मेल–hindiaandolan@gmail.com

कहानी

लड़की थी वह

सुधा ओम ढींगरा (अमेरिका)

दिसम्बर १९९५ की कड़ाकेदार सर्दी की वह रात थी और वही रात तो आज मेरी कलम पर कहानी बन आ बैठी है । आप इसे पढ़ कर कुछ भी सोचें पर मैं इसके अंत में स्तब्ध रह गई थी ।

घर के सभी सदस्य उस रात रजाइयों में दुबके पड़े थे। दिन भर से बिजली का कट था, जो भारतवासियों के लिए आम बात है । इधर बिजली जाती है, उधर घर-घर इन्वर्टर चालू हो जाते हैं । इसकी रोशनी में बच्चों की पढ़ाई, घर के छोटे-मोटे और रसोई के बड़े काम सहजता से कर लिए जाते हैं। हाँ, ऐसे में टीवी देखने से तक़रीबन सभी कतराते हैं। पूरा परिवार रसोई और साथ के कमरे में या किसी एक कमरे में सिमट कर रह जाता है। उस दिन भी इन्वर्टर की रोशनी में खाने-पीने से निपटकर, टीवी न देख पाने के कारण, हमने समय बिताने के लिए फिल्मी गीतों की अन्ताक्षरी खेलनी शुरु की, और खेलते-खेलते सब सर्दी से ठिठुरते रजाइयों में घुस गए।

पंजाब में बिजली का कट, गर्मी और सर्दी का मौसम नहीं देखता था। जबकि पूरे भारत में उन दिनों सर्दियों में कम ही बिजली जाती थी ।

तकनीकी तरक्की और भौतिक सुविधाओं ने तब के भारत और आज के भारत में बहुत परिवर्तन ला दिया है। शहरों में तो अब सुविधा संपन्न ऐसी-ऐसी इमारतें और घर हैं कि बिजली-पानी के कट से उनका कोई वास्ता ही नहीं। पर उन दिनों बिजली कट के बाद घर-घर में एक जैसा ही माहौल होता था ।

दिसम्बर की छुट्टियों में हम तीन सप्ताह के लिए भारत जा पाते थे। बेटे की छुट्टियाँ तभी होती थीं। करीब और दूर के रिश्तेदारों को पापा घर पर ही मिलने के लिए बुला लेते थे। उन्हें लगता था कि हम इतने कम समय में कहाँ-कहाँ और किस-किस से मिलने जाएँगे, मिले बिना वापिस आना भी अच्छा नहीं लगता। हमारे जाने पर घर में खूब गहमागहमी और रौनक हो जाती थी। बेटे को अमेरिका की शांत जीवन शैली उपरांत भारत की चहल-पहल बहुत भाती थी, विशेषकर परिवार के सदस्यों का इकठ्ठा हो कर बैठना। बार-बार जब डोर बेल बजती तो वह भाग कर दरवाज़ा खोलने जाता.. और बिना फ़ोन किये आए मेहमानों को देख कर ख़ुशी से उछल पड़ता था। अमेरिका में फ़ोन किए बिना कोई मिलने नहीं आता। औपचारिक धरती पर ऐसी सौहार्दता कहाँ नसीब होती है ? रिश्तों का सम्मान, सम्बन्धों की गरिमा, उनकी गर्माहट वह पूरा वर्ष महसूस करता..और हर साल हम से पहले भारत आने के लिए तैयार हो जाता।

दिन भर के कार्यों से थके-मांदे रजाइयों की गर्माहट पाते ही सब सो गए। आधी रात के आसपास कुत्तों के भौंकनें की आवाज़ें आनी शुरू हुईं।आवाज़ें तेज़ एवं ऊँची होती गईं । नींद खुलनी स्वाभाविक थी। रजाइयों को कानों और सिर पर लपेटा गया ताकि आवाज़ें ना आएँ, पर कुत्तों का भौंकना और ऊँचा एवं करीब होता महसूस हुआ। जैसे हमारे घरों के सामने खड़े भौंक रहे हों।

घरेलू नौकर-नौकरानी मीनू-मनु साथ वाले कमरे में सो रहे थे। रात के सन्नाटे में उनकी आवाज़ें उभरीं,

…. 'रविपाल के दादाजी बहुत बीमार हैं, लगता है, यम उन्हें लेने आए हैं और कुत्तों ने यम को देख लिया है।'

….. 'यम देख कुत्ता रोता है, ये रो नहीं रहे।'

….. 'तो क्या लड़ रहे हैं ?'

….. 'लड़ भी नहीं रहे ।'

….. 'मुझे तो ऐसा महसूस हो रहा है कि ये हमें बुला रहे हैं।'

….. 'मैं तो इनकी बिरादरी की हूँ नहीं, तुम्हीं को बुला रहे होंगे ।'

पापा ने उन्हें डाँटा-'मीनू-मनु, कभी तो चुप रहा करो।'

मेरा बेटा अर्द्धनिद्रा में ऐंठा 'ओह गॉश ! आई डोंट लाइक दिस।'

तभी हमारे सामने वाले घर का छोटा बेटा दिलबाग, लाठी खड़काता माँ-बहन की विशुद्ध गालियाँ निकालता, अपने घर के मेनगेट का ताला खोलने की कोशिश करने लगा। जालंधर में चीमानगर, रहने के लिए बड़ा पॉश एवं सुरक्षित स्थान माना जाता है। घरों की हर लेन अंत में बंद है। अमेरिका के कल-डी-सैक की तरह बाहरी आवाजाही कम होती है। फिर भी रात को सभी अपने-अपने मुख्य द्वार पर ताला लगा कर सोते हैं। उसके ताला खोलने और लाठी ठोंकते बाहर निकलने की आवाज़ आई।

वह एम्वे का मुख्य अधिकारी है और पंजाबी की अशिष्ट गालियाँ, विशिष्ट अंग्रेज़ी लहज़े में बोल रहा था। लगता था कि

रात पार्टी में पी गई शराब का नशा अभी तक उतरा नहीं था। अक्सर पार्टियों से टुन होकर, जब वह रात को घर आता था तो ऐसी ही भाषा का प्रयोग करता था। उसे देख कर कुत्ते भौंकते हुए एक तरफ को भागने लगे। वह लाठी ज़मीन पर बजाता, पड़ौसियों को ऊँची आवाज़ में कोसता, उनके पीछे-पीछे भागने लगा, 'साले...घरां विच डके सुत्ते पए नें, एह नई की मेरे नाल आ के हरामियां नूँ दुड़ान...भैण दे टके... '(साले घरों में दुबके सोए हुए हैं और यह नहीं करते कि मेरे साथ आकर कुत्तों को भगाएं...बहन के टके)।

मेरे बेटे ने करवट बदली,सिरहाना कानों पर रखा, मॉम, आई लव इंडिया। आई लाइक दिस लैंगुएज।'

दिलबाग हमारे घर के साथ लगने वाले खाली प्लाट तक ही गया था, जो इस लेन का कूड़ादान और कुत्तों की शरणस्थली बना हुआ है कि उसकी गालियाँ अचानक बंद हो गईं, और ऊँची आवाज़ में लोगों को पुकारने और बुलाने में बदल गईं - 'जिन्दर, पम्मी, जसबीर, कुलवंत, डाक्डर साहब जल्दी आएं'.. उसका यूँ पुकारना था कि हम सब यंत्रवत बिस्तरों से कूद पड़े। किसी ने स्वेटर उठाया, किसी ने शॉल, सब अपनी-अपनी चप्पलें घसीटते हुए बाहर की ओर भागे। मनु ने मुख्य द्वार का ताला खोल दिया था। सर्दी की परवाह किए बिना, सब खाली प्लाट की ओर दौड़े। खाली प्लाट का दृश्य देखने वाला था । सब कुत्ते दूर चुपचाप खड़े थे। घरों से निकाल कर फेंके गए फालतू सामान के ढेर पर, एक पोटली के ऊपर स्तन धरे और उसे टांगों से घेर कर एक कुतिया बैठी थी। उस प्लाट से थोड़ी दूर नगरपालिका का बल्ब जल रहा था, जिसकी मद्धिम भीनी-भीनी रोशनी में दिखा कि पोटली में एक नवजात शिशु लिपटा हुआ पड़ा है और कुतिया ने अपने स्तनों के सहारे उसे समेटा हुआ है,..जैसे उसे दूध पिला रही हो ! वहाँ पहुँचे सभी लोग स्तब्ध रह गए! दृश्य ने सब को स्पंदनहीन कर दिया था । तब समझ में आया कि कुत्ते भौंक नहीं रहे थे, हमें बुला रहे थे।

'पुलिस बुलाओ' एक बुज़ुर्ग की आवाज़ ने सब की तंद्रा तोड़ी।

अचानक हमारे पीछे से एक सांवली पर आकर्षित युवती शिशु की ओर बढ़ी। कुतिया उसे देख कर परे हट गई। उसने बच्चे को उठा कर सीने से लगा लिया। बच्चा जीवित था। शायद कुतिया ने अपने साथ सटाकर, अपने घेरे में ले कर, उसे सर्दी से यख होने से बचा लिया था। पहचानने में देर ना लगी कि यह तो अनुपमा है जिसने बगल वाला मकान खरीदा है। गरीब माँ-बाप पैसे के अभाव में इसकी शादी नहीं कर पाए और इसने अपने दम पर उच्च शिक्षा ग्रहण की और स्थानीय महिला कालेज में प्राध्यापिका के पद पर आसीन हुई।

'डाक्टर साहब इसे देखें, यह ठीक तो है ? मैं इसे पालूँगी।' मधुर आवाज़ में उसने अपने सीने से सटे नवजात शिशु को हटा कर, अपने शॉल में लपेट कर पापा की ओर बढ़ाया। पापा ने गठरी की तरह लिपटा बच्चा खोला, लड़की थी वह...।

स्तब्धता की ठण्ड भीतर तक जम गई ..!

अनमोल सीख

एक बार टॉलस्टाय के पास एक युवक आया और बोला-आप मेरी सहायता कीजिये, मैं बहुत परेशान हूँ। मेरे पास इस समय फूटी कौड़ी भी नहीं है। टॉलस्टाय ने उसकी परेशानी सुनने के बाद कहा-मेरा एक दोस्त व्यापारी है, वह इन्सानी आँखों को खरीदता है। तुम्हारी आँखों के बीस हजार तो दे ही देगा। -जी नहीं, मैं अपनी आँखें नहीं बेच सकता युवक घबरा कर बोला।

टॉलस्टाय ने एक बार और प्रयास किया- वह हाथों को भी खरीदता है, तुम्हारे हाथों की कीमत पंद्रह हजार रूपये दे देगा। युवक ने घबराकर इन्कार से सिर हिलाया और बोला-मुझे आप से यह उम्मीद नहीं थी। टॉलस्टाय उसकी नाराजगी से विचलित हुए बिना बोले- मुझे तुम्हारी परेशानी का अहसास है इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम्हारे लिए इस तरह का सौदा बहुत अच्छा रहेगा। अगर तुम्हें मालदार बनना है तो एक लाख रूपये लेकर अपना पूरा शरीर बेच दे। हमेशा के लिए परेशानियों से निजात मिल जाएगी। -एक लाख तो क्या मैं एक करोड़ में भी अपना शरीर नहीं बेचूंगा, युवक चीख कर बोला।

इस पर टॉलस्टाय ने मुस्करा कर कहा, जो शख्स अपना जिस्म एक करोड़ में भी नहीं बेच सकता, वह कैसे कह रहा है कि उसके पास कुछ भी नहीं है। यह पूरा शरीर एक खजाना है, ईमानदारी से मेहनत करो, सोना चांदी तो क्या सूरज-चांद भी तुम्हारे हाथ में आ सकते हैं। अब युवक उनके मंतव्य को समझ गया और बोला- मैं आपका बेहद शुक्रगुजार हूँ , आप ने मेरी आँखें खोल दी ।